



भारतीय रिज़र्व बैंक RESERVE BANK OF INDIA

वेबसाइट : www.rbi.org.in/hindi

Website : www.rbi.org.in

ई-मेल/email : helpdoc@rbi.org.in

संचार विभाग, केंद्रीय कार्यालय, शहीद भगत सिंह मार्ग, फोर्ट, मुंबई-400001

Department of Communication, Central Office, Shahid Bhagat Singh Marg, Fort,

Mumbai-400001 फोन/Phone: 022- 22660502

19 मार्च 2024

आरबीआई बुलेटिन- मार्च 2024

भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपने मासिक बुलेटिन का [मार्च 2024](#) अंक आज जारी किया। बुलेटिन में चार भाषण, तीन आलेख, वर्तमान आंकड़े शामिल हैं।
तीन आलेख हैं: I. [अर्थव्यवस्था की स्थिति](#); II. [महामारी-प्रेरित नीति प्रोत्साहन और मुद्रास्फीति: सीमा-पारीय परिप्रेक्ष्य](#) ; III. [भारत के प्रमुख आर्थिक संकेतकों में मौसमीपन](#) ।

I. अर्थव्यवस्था की स्थिति

कतिपय आघात-सहनीय अर्थव्यवस्थाओं की संवृद्धि धीमी होने के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था की गति धीमी हो गई है तथा उच्च आवृत्ति संकेतक आने वाले समय में और अधिक समतलता की ओर इशारा कर रहे हैं। भारत में, 2023-24 की तीसरी तिमाही में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि छह-तिमाही के उच्चतम स्तर पर थी, जो मजबूत गति, मजबूत अप्रत्यक्ष करों और अल्प सब्सिडी द्वारा संचालित थी। संरचनात्मक मांग की उच्च दृश्यता और स्वस्थ कॉर्पोरेट और बैंक तुलन-पत्र आगे चलकर संवृद्धि को गति देने वाली शक्तियां होंगी। भले ही मूल मुद्रास्फीति में वैविध्यपूर्ण सौम्यता के कारण मुद्रास्फीति कम हो रही है, लघु आयाम वाले खाद्य मूल्य दबावों की बार-बार होने वाली घटनाएं हेडलाइन मुद्रास्फीति में 4 प्रतिशत के लक्ष्य की ओर तेजी से गिरावट को रोकती हैं।

II. महामारी-प्रेरित नीति प्रोत्साहन और मुद्रास्फीति: सीमा-पारीय परिप्रेक्ष्य

निशांत सिंह और बिनोद बी. भोई द्वारा

वैश्विक मुद्रास्फीति, जो शुरुआत में 2020 में कोविड महामारी की शुरुआत के बाद आर्थिक संकुचन के कारण नरम हुई थी, 2021 में कोविड-समय प्रतिबंधों में ढील के साथ बढ़ना शुरू हुई और रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद 2022 में कई वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। सामान्य वैश्विक झटकों के बावजूद, स्तर और दृढ़ता दोनों के संदर्भ में मुद्रास्फीति में वृद्धि, सभी अर्थव्यवस्थाओं में अलग-अलग है। पैनल-डेटा फिलिप्स कर्व फ्रेमवर्क का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन चुनिंदा उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति पर महामारी-प्रेरित राजकोषीय विस्तार के प्रभाव की जांच करता है, जो आपूर्ति-पक्ष के कारकों को नियंत्रित करता है।

मुख्य बातें:

- अनुभवजन्य परिणाम बताते हैं कि महामारी के बाद की अवधि में उच्च मुद्रास्फीति परिणाम बड़े राजकोषीय विस्तार वाली अर्थव्यवस्थाओं में देखे गए थे। इसकी पुष्टि पैनल प्रतिगमन परिणामों से निकाले गए गुणांकों के संकेतों और महत्व से होती है।
- मध्यम राजकोषीय समर्थन वाले देशों ने आम तौर पर अपेक्षाकृत मध्यम मुद्रास्फीति परिणामों का अनुभव किया है।
- भारत के मामले में, सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन गुणांक बताता है कि महामारी के बाद राजकोषीय समर्थन उच्च मुद्रास्फीति से जुड़ा नहीं था। भारत में राजकोषीय नीति संबंधी उपायों को महामारी के शुरुआती चरणों के दौरान सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य देखभाल पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ

कमजोर वर्गों पर लक्षित किया गया था, बाद में इसे विशिष्ट क्षेत्रों को लक्षित करने के लिए अतिरिक्त सार्वजनिक निवेश और सहायता योजनाओं से सहायता मिली।

III. भारत के प्रमुख आर्थिक संकेतकों में मौसमीपन

शिवांगी मिश्रा, राजेंद्र रघुमंद और संजय सिंह द्वारा

कोविड जन्य आर्थिक व्यवधानों ने समष्टि वित्तीय डेटा में अत्यधिक अस्थिरता ला दी, जिससे मौसमी समायोजन दृष्टिकोण पर फिर से विचार करना आवश्यक हो गया। इस पृष्ठभूमि में, यह आलेख इस अस्थिरता को संबोधित करने के विभिन्न दृष्टिकोणों और छह व्यापक क्षेत्रों (जैसे, धन और बैंकिंग, मूल्य, औद्योगिक उत्पादन, वस्तु व्यापार, सेवाएँ और भुगतान प्रणाली संकेतक) को शामिल करने वाले 79 समष्टि आर्थिक चर के मौसमी समायोजन के लिए अपनाए गए मौसमी समायोजन संबंधी सबसे उपयुक्त दृष्टिकोण के बारे में बताता है।

मुख्य बातें:

- औद्योगिक उत्पादन, मौद्रिक/ बैंकिंग, भुगतान प्रणाली संकेतक और वस्तु व्यापार तथा सेवाओं के संकेतकों में अधिकांश आइटम मार्च के आसपास मौसमी उच्च स्तर पर पहुंचते हैं, जबकि उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं, यात्री वाहन बिक्री और कार्ड भुगतान का उत्पादन त्योहार की मांग को दर्शाते हुए अक्टूबर में चरम पर होता है।
- मानसून के मौसम के दौरान सब्जियों की कीमतों के कारण सीपीआई में कीमतों पर दबाव देखा जाता है। गर्मियों के महीनों के दौरान फलों की कीमतें चरम पर होती हैं।
- कोविड-पूर्व अवधि की तुलना में, हाथ में नकदी और भारतीय रिज़र्व बैंक के पास शेष राशि, प्राथमिक वस्तुओं के उत्पादन, उपभोक्ता वस्तुओं, कपड़ा, पेट्रोलियम उत्पादों, बिजली उत्पादन, यात्री वाहन बिक्री और वस्तु निर्यात के लिए मौसमी भिन्नता बढ़ गई है।

बुलेटिन के आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं और यह भारतीय रिज़र्व बैंक के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।